

आरती कुंज बिहारी की गीतुंज बिहारी की गीत

आरती कुंज बिहारी की गीतुंज बिहारी की गीत

आरती कुंजबिहारी की कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

आरती कुंजुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

गले में बैजंती मालांती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला ।ाला ।
श्रवण में कुण्डल झलकालाण्डल झलकाला,
नंद केआनंद नंदलाला ।ं
दलाला ।
गगन सम अंग कांति काली
काली,
राधिका चमक रही आली ।
का चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमालीनमाली
भ्रमर सी अलक,
कस्तूरी तिलकलक,
चंद्र सी झलकंद्र सी झलक,
ललित छवि श्यामा
श्यामा प्यारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ कुंजबिहारी की...॥

कनकमय मोर मुकुट बिलसैट बिलसै,
देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसैं ।रसैं ।
बजे मुरचंग,
मधुर मिरदंग,

ग्वालिन संग

,
अतुल रति गोप कुमारी कीमारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ुंजबिहारी की...॥

जहां ते प्रकट भई गंगा
ा,
सकल मन हारिणि श्री गंगा ।
ा ।
स्मरन ते होत मोह भंगा
बसी शिव सीसिव सीस,
जटा केबीचीच,
हरै अघ कीच,
चरन छवि श्रीबनवारी की
नवारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ुंजबिहारी की...॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनूवल तट रेनू,
बज रही वृंदावन बेनू ।ेनू ।
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू
ग्वाल धेनू
हंसत मृदु मंदं
द,
चांदनी चंदं
द,
कटत भव फंदंद,
टेर सुन दीन दुखारी की
खारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ कुंजबिहारी की...॥

आरती कुंजबिहारी की कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

आरती कुंजबिहारी की कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥